साहित्योत्सव
Festival of Letters
21 - 26 February 2017

साहित्य अकादेमी

दैनिक समाचार बुलेटिन

सोमवार, 27 फ़रवरी 2017

'अनुवाद पुनर्कथन के रूप में' राष्ट्रीय संगोष्ठी संपन्न

साहित्योत्सव के अंतिम दिन 'अनुवाद पुनर्कथन के रूप में' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ के. श्रीनिवासराव ने संगोष्ठी के प्रारंभ में विद्वान अतिथियों का स्वागत किया और कहा कि अकादेमी पिछले साहित्योत्सव से अनुवाद विषय पर केंद्रित विमर्श का आयोजन कर रही है। ये संगोष्ठी उसी क्रम में आयोजित की जा रही है। हम चाहते हैं कि अनुवाद क्षेत्र में लंबे समय से काम कर रहे विद्वान रचना के अनुवाद में आने वाली समस्याओं और सीमाओं पर अपने व्यावहारिक अनुभव से तैयार किए गए आलेख प्रस्तुत करेंगे, जो गरिष्ठ अकादेमिक चर्चा से मुक्त होगा। इस प्रकार अनुवाद के क्षेत्र में सक्रिय अनेक अनुवादक लाभान्वित हो सकेंगे, ऐसी आशा है।

प्रख्यात गुजराती लेखक एवं अनुवादक प्रो. सितांशु यशश्चंद्र ने उद्घाटन वक्तव्य दिया। उन्होंने कहा कि संगोष्ठी का शीर्षक 'अनुवाद पुनर्कथन के रूप में' ही स्वयं इसका उद्घाटन कर चुका है। इस शीर्षक की द्वि-भाषिकता अनेक प्रश्नों का शमन करने के लिए पर्याप्त है। पुनर्कथन की अपनी एक यात्रा है। सत्रहवीं शताब्दी के प्रेमानंद ने पुराणों का पुनर्कथन किया था। अनुवाद का अनुवादक और अनुवाद के पाठक से सघन संबंध है। यह संगोष्ठी अनुवाद की राहों का वास्तविक अध्ययन है। उन्होंने कहा कि संस्कृत नाटकों में दो प्रकार की भाषा मिलती है। उनमें राजा संस्कृत बोलता है, जबकि रानी प्राकृत बोलती है। यह प्रतिपादन 'अनुवाद' नहीं, बल्कि 'छाया' है। उन्होंने आशा व्यक्त की कि एक दिन ऐसा आएगा, जब मलयाळम् के सभी वाक्य गुजराती में और गुजराती के सभी वाक्य मलयाळम् में और अन्य सभी भारतीय भाषाओं में परस्पर अनूदित होकर उपलब्ध होंगे।

प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने अध्यक्षीय वक्तव्य दिया। उन्होंने अनुवाद शब्द के लिए हिंदी और संस्कृत साहित्य में पूर्व प्रचलित विभिन्न शब्दों—टीका, भाष्य, वार्तिक, वृत्ति, कारिका, अनुकथन, पुनर्कथन आदि का जिक्र किया और कहा कि पुनर्कथन की परंपरा भारतीय वाङ्मय में हज़ारों वर्ष पूर्व से मौजूद रही है। उन्होंने अनुवाद और पुनर्कथन के कई उदाहरण दिए। प्रो. तिवारी ने कहा कि रामायण और महाभारत के सबसे अधिक अनुवाद हुए हैं। उन्होंने कहा कि तुलसीदास ने शब्दशः अनुवाद भी किया और पुनर्कथन भी। इस प्रकार रचना का पुनर्सृजन किया है। प्रो. तिवारी ने कहा कि सभी भारतीय भाषाओं में 'राम कथा' मिलती है, जिसमें प्रत्येक क्षेत्र और संस्कृति ने अपनी तरह से उसका अनुवाद पुनर्कथन के रूप में किया है, वह भी वास्तविक है। इस प्रकार अनुवाद का कार्य सृजन भी है और पुनर्सृजन भी। यूरोप से 'ट्रांसलेशन' शब्द आने से पूर्व ही भारतीय भाषाओं में इसके अनेक प्रारूप उपलब्ध थे।

प्रतिष्ठित अंग्रेज़ी विद्वान और अनुवादक सुमन्यु सत्पथी ने बीज वक्तव्य दिया। उन्होंने कहा कि 'अनुवाद' एक स्त्री की तरह है, अगर वह सुंदर है तो विश्वनीय नहीं और यदि विश्वास के काबिल है तो सुंदर नहीं। उन्होंने कहा कि मेरे मतानुसार अनुवाद को सुंदर और विश्वनीय दोनों होना चाहिए। उन्होंने बताया कि सारला दास महाभारत का कभी तो अनुवाद करती हैं और कभी उसका सृजन, कभी-कभी वे इसे मूल रूप से लिखती हैं। उन्होंने 'एलिस इन वंडरलैंड' का ज़िक्र किया और कहा इसका विभिन्न भारतीय भाषाओं में अनेक तरीकों से अनुवाद हुआ है। अनुवादक अपने काम में अभिनव परिवर्तनात्मक रहे हैं उन्होंने मूल टेक्स्ट के साथ विमर्श में पर्याप्त स्वतंत्रता भी ली है। अकादेमी के उपाध्यक्ष डॉ. चंद्रशेखर कंबार ने सभी वक्ताओं के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया।

संगोष्ठी का प्रथम सत्र 'भक्ति आंदोलन : अनुवाद पुनर्कथन के रूप में' विषय पर केंद्रित था। इस सत्र की अध्यक्षता सुश्री मिनि कृष्णन् ने की। सत्र

में डॉ. चंद्रकांत पाटिल और डॉ. जे. एल. रेड्डी ने अपने आलेखों का पाठ किया। चर्चित अनुवादक चंद्रकांत पाटिल ने कहा कि मध्यकालीन कवियों ने 'अनुवाद' शब्द का भिन्न अर्थों में प्रयोग किया है। शब्द-व्युत्पत्तिशास्त्र के अनुसार, 'अनुवाद' 'अनु' और 'वद्' मूल शब्दों के योग से बना है। 'अनु' का अर्थ है—पूर्व के किसी का अनुसरण और 'वद्' का अर्थ है—कहना या बोलना। उन्होंने संत ध्यानेश्वर के कथन का उदाहरण देकर अनुवाद पुनर्कथन की विस्तृत चर्चा की। उन्होंने कहा कि चंद्रकांत देवताले द्वारा तुकाराम के सौ चयनित अभंगों का अनुवाद पुनर्कथन का महत्त्वपूर्ण उदाहरण है। उन्होंने कहा कि मध्यकालीन भक्ति साहित्य का पुनर्कथन आज भी महत्त्वपूर्ण और प्रासंगिक बना हुआ है।

डॉ. जे. एल. रेड्डी ने कहा कि राम कथा के पात्र विभिन्न भारतीय भाषाओं में उपलब्ध राम कथाओं में अपना अलग-अलग चरित्र रखते हैं। उन्होंने कहा कि ये हमारी परंपरा है कि भारतीय लोक कथाओं और मिथकों का हम नए पाठ निर्मित करते हैं। सत्र के अध्यक्ष डॉ. मिनि कृष्णन ने कहा कि अनुवादक सिर्फ़ मूल कथा का अपनी भाषा में अनुवाद अथवा पुनर्कथन ही नहीं करता बल्कि नए सिरे से उस कथा को समझ भी रहा होता है।

संगोष्ठी का द्वितीय सत्र 'भारतीय साहित्यिक परंपरा में अनुवाद परंपरा : मौखिक एवं लिखित' विषय पर केंद्रित था। इस सत्र की अध्यक्षता सुश्री ब्लांका क्नोतकोवा ने की। सत्र में सुश्री रक्षंदा जलील, डॉ. राणा नायर और रामशंकर द्विवेदी ने आलेख प्रस्तुत किए।

डॉ. रक्षांदा जलील ने ग़ालिब का एक शेर - 'कोई मेरे दिल से पूछे तेरे तीरे नीमकश को/ये ख़लिश कहाँ से होती जो जिगर के पार होता' - उद्धृत करते हुए अनुवाद की समस्या का ज़िक्र किया और कहा कि उर्दू शायरों ने 'जिगर' शब्द का प्रयोग दिल के अर्थ में किया है, बायोलॉजी में भले ही जिगर को 'लिवर' कहा जाता है। इसलिए भाषा की संस्कृति और कहन की ख़ासियत को समझना बहुत ज़रूरी है तभी सही अनुवाद हो सकता है। उन्होंने कहा कि मैं आम पाठकों के लिए अनुवाद करती हूँ। उन्होंने बताया कि अच्छे अनुवाद का मापदंड सुपाठ्य और मनोरंजक होना माना जा सकता है।

डॉ. राना नायर ने अनुवाद को मूल रचना के लिए 'कायाकल्प' माना। उन्होंने कहा कि अनुवादक त्रिशंकु या नारद के मिथकीय चरित्र की तरह मुझे लगते हैं, जो दो भाषा संस्कृतियों के बीच झूलते-गति करते एक तीसरी भाषा का आविष्कार करते हैं।

डॉ. राम शंकर द्विवेदी ने कहा कि हर भाषा के साहित्य में दो धाराएँ समानांतर रूप से चलती हुई दिखाई देती हैं - एक उसके अपने साहित्य की धारा, दूसरी अन्य साहित्य से अनूदित साहित्य की धारा। दोनों धाराएँ अजस्र, अगाध, और साथ-साथ चलने वाली होती हैं। इनके मूल में रहती है ज्ञानवर्द्धन के साथ दूसरी भाषा के साहित्य को जानने की उत्सुकता और अपनी भाषा के साहित्य में जो अभाव होता है उसे दूर करने की भावना। दोनों प्रखर, तीव्र और जब तक अक्षरों की सत्ता है तब तक चिरंतन रहेंगी।

सत्र की अध्यक्ष ब्लांका क्नोतकोवा ने कहा अनुवाद किसी भाषा संस्कृति का दूसरी भाषा संस्कृति में विस्तार है। इस तरह अनुवादक का कार्य बहुत महत्त्वपूर्ण और उत्तरदायित्व से भरा होता है।

'लोकसाहित्य : कथन एवं पुनर्कथन' विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी संपन्न

इस त्रिदिवसीय संगोष्ठी के अंतिम दिन सातवाँ सत्र प्रो. भालचंद्र नेमाड़े की अध्यक्षता में संपन्न हुआ, जो 'लोक साहित्य : बहुभाषी परिप्रेक्ष्य' पर केंद्रित था, जिसमें डॉ. अनिल बोरो, डॉ. काशीनाथ वी. बरहटे एवं प्रो. प्रदीप ज्योति महंत ने अपने आलेख पढ़े। डॉ. अनिल बोरो ने कहा कि लोकसाहित्य पूर्वोत्तर भारत जैसे बहुभाषी समाज में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। परंपराभिमुखी जिस समाज में हम हैं, वह लोकसाहित्य से भरपूर है, चाहे वह गीत हो, कहानियाँ हों अथवा प्रथाएँ। डॉ. काशीनाथ वी. बरहटे ने कहा कि भारतीय संस्कृति की विशिष्टता इसकी बहुभाषिकता और संस्कृति बहुलता में ही है। उनका आलेख 'कोर्कू उप-जनजाति और कोर्कू भाषा' पर केंद्रित था, जिसमें उन्होंने विस्तार से इसके इतिहास और क्षेत्र का वर्णन किया। डॉ. प्रदीप ज्योति महंत ने असम स्थित वैष्णव सत्रों की विशिष्ट परंपराओं पर अपना आलेख पाठ किया। उन्होंने संत गुरुओं से संबंधित आख्यानों के हवाले से अपनी बात कही।

आठवें सत्र की अध्यक्षता डॉ. प्रदीप ज्योति महंत ने की, जो 'लोक आख्यान' पर केंद्रित था। इस सत्र में श्री रमेंद्र कुमार, डॉ. वरुण चक्रवर्ती और डॉ. सुरजीत सिंह ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। श्री रमेंद्र कुमार ने लोककथाओं और मिथकों के अंतर्संबंधों पर अपना आलेख पाठ करते हुए कहा कि कभी-कभी ये एक-दूसरे से इतना अधिक प्रभावित रहते हैं कि इन्हें अलग करना मुश्किल हो जाता है। डॉ. वरुण चक्रवर्ती ने कहा कि लोककथाएँ सर्वाधिक आकर्षक होती हैं। ये सहजता से हर उम्र के लोगों को मोह लेती हैं। डॉ. सुरजीत सिंह ने कहा कि लोक आख्यान सांस्कृतिक निर्माण की प्रक्रिया में ऐतिहासिक ज्ञान की कुंजी होते हैं।

'लोकसाहित्य एवं संस्कृति' पर केंद्रित नवें सत्र की अध्यक्षता प्रो. एच. एस. शिवप्रकाश ने की, जिसमें डॉ. सीमा शर्मा और सुश्री अपराजिता शुक्ला ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। डॉ. शर्मा ने लोकप्रिय माध्यमों द्वारा प्रस्तुत किए जा रहे लोकसाहित्य के संदर्भ में अपनी बात रखते हुए कहा कि इस पुनः प्रस्तुति की प्रक्रिया में बहुत कुछ हाशिए पर छूट जाता है। सुश्री अपराजिता ने उत्तराखंड के 'जगार' पर केंद्रित अपने आलेख का पाठ किया।

'भारत की अलिखित भाषाएँ' विषयक परिसंवाद संपन्न

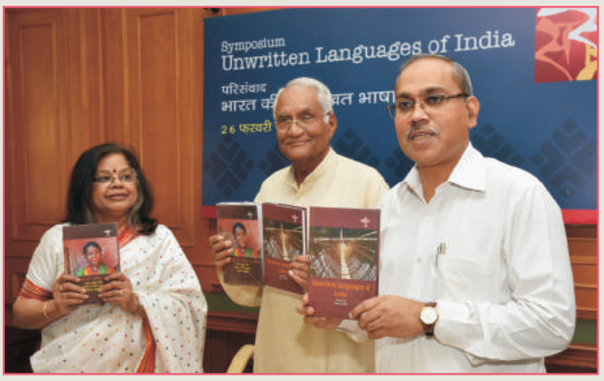

साहित्योत्सव के अंतिम दिन 'भारत की अलिखित भाषाएँ' विषयक परिसंवाद का आयोजन तीन वैचारिक सत्रों में किया गया। प्रथम सत्र, अकादेमी के जनजातीय एवं वाचिक साहित्य केंद्र, नई दिल्ली की निदेशक प्रो. अन्विता अब्बी की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। आरंभ में अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने औपचारिक स्वागत करते हुए अकादेमी द्वारा गैर-मान्यता प्राप्त भाषाओं के लिए किए जा रहे कार्यों के बारे में संक्षेप में बताया। डॉ. अवधेश कुमार मिश्र ने पूर्वोत्तर भारत की भाषाओं पर बात करते हुए कहा कि यह प्रसन्नता की बात है पूर्वोत्तर की सभी भाषाएँ किसी-न-किसी लिपि में लिखी जा रही हैं। विभिन्न क्षेत्रों की बोली या स्थानीय भाषाएँ प्रायः अपने क्षेत्र की प्रमुख भाषा लिपि को अपनाती हैं। लेकिन पूर्वोत्तर को अधिकांश भाषाओं को रोमन लिपि को विभिन्न संशोधनों के साथ अपनाया हुआ है। इंदिरा गाँधी अंतरराष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के प्रो. अवधेश कुमार सिंह ने कहा कि वाचिक और लिखित में वे वाचिक को ही अधिक महत्त्वपूर्ण मानते हैं। इस सत्र में प्रो. पुरुषोत्तम बिलिमाले और डॉ. शैलेंद्र मोहन ने क्रमशः तुलु और निहाली भाषाओं के संदर्भ में अपने आलेख प्रस्तुत करते हुए विस्तार से उनकी विशिष्टताओं के बारे में बताया। प्रो. अन्विता अब्बी ने कहा कि भारत एक भाषा समृद्ध देश है तथा यहाँ के वाचिक साहित्य एवं परंपराओं को लिखित रूप में लानें के साथ-साथ उन्हें उनके वाचिक रूप में भी बचाकर रखने की ज़रूरत है।

इस अवसर पर अकादेमी द्वारा प्रकाशित दो पुस्तकों *अनरिटेन लैंग्वेज़ेज़ ऑफ़ इंडिया* (संपा. : अन्विता अब्बी) तथा *कालाहांडी के वाचिक महाकाव्य* (ले. : महेंद्र कुमार मिश्र, अनु. : दिनेश मालवीय) का लोकार्पण अकादेमी के अध्यक्ष प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी द्वारा किया गया। पुस्तकों का लोकार्पण करते हुए उन्होंने कहा कि एक समय था जब वाचिक ही सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण होता था, लेकिन आज जब लिखित महत्त्वपूर्ण हो गया है तब इस तरह की पुस्तकों का प्रकाशित होना सुखदायी है।

परिसंवाद का दूसरा वैचारिक सत्र प्रो. सुकृता पॉल कुमार की अध्यक्षता में संपन्न हुआ, जिसमें प्रो. आनंद महानंद, प्रो. भक्तवत्सला भारती और प्रो. सी. महेश्वरन ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। प्रो. महानंद ने विशिष्ट आदिवासी वाचिक परंपराओं और आधुनिकता के संदर्भ में अपनी पावर-प्वाइंट प्रस्तुति की। प्रो. भारती और प्रो. महेश्वरन ने क्रमशः नीलगिरि पर्वत शृंखला के मध्य रहने वाली टोडा और अलु कुनवा जनजातियों और उनकी भाषाओं पर केंद्रित अपने आलेख प्रस्तुत किए।

परिसंवाद का तृतीय सत्र 'अलिखित भाषाओं का वजूद' विषयक परिचर्चा का था, जिसकी अध्यक्षता प्रो. अवधेश कुमार सिंह ने की। इस परिचर्चा में श्रीमती आयेशा क़िदवई, श्रीमती कीर्ति जैन, श्रीमती वासमल्ली, श्री जोसेफ़ बरा और श्री कार्तिक नारायणन ने सहभागिता की।

साहित्य अकादेमी
रवींद्र भवन, 35, फ़ीरोज़शाह मार्ग, नई दिल्ली-110 001
दूरभाष : 011 23386626/27/28, फ़ैक्स : 011 23382428
ईमेल : secretary@sahitya-akademi.gov.in
वेबसाइट : www.sahitya-akademi.gov.in
फ़ेसबुक : http://www.facebook.com/Sahityaakademi